इस्लामी अक़ीदा

क़ुरआन और हदीस की रोशनी में



लेखक
मुहम्मद बिन जमील ज़ैनू

अनुवादक
अहमदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह



المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالشفا
ص.ب: ٣١٧١٧ - الرمز البريدي: ١١٤١٨ - الرياض هاتف: ٤٢٢٢٦٢٦ - ٤٢٠٠٦٢٠

بسم الله الرحمن الرحيم

इस्लाम और ईमान का अर्थ

प्रश्नः इस्लाम क्या है?

उत्तरः इस्लाम जो अल्लाह पर ईमान रखे उसके एक होने का, और उसकी आज्ञा का पालन करे और शिर्क से दूर रहे। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿ بَلَى مَنْ أسلَمَ وَجْهَهُ لِلّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ وَلاَ خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ (١)

(सुनो! जिसने अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया वह नेक (भी) है तो उसके लिए उस के रब के यहाँ अज्र है और न उनपर कोई डर होगा न कोई ग़म)

नबी अकरम ﷺ ने फरमायाः

"الإِسْلامُ أَن تَشْهَدَ أَن لا إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّداً رَسُولُ اللهِ، وَتُقِيمَ الصَّلاَةَ، وَتُؤتِيَ الزَكَاةَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ البَيتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَيْهِ سَبِيلاً" (٢)

(इस्लाम यह है कि गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई

---

(1) बक़राः 112
(2)मुस्लिम

माबूद नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के संदेशवाहक हैं, और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात अदा करो, और रमज़ान के रोज़े रखो, और अल्लाह के घर (काबा) का हज करो अगर वहाँ तक पहुँचने की ताकत है।

प्रश्नः ईमान क्या है?

उत्तरः दिल से आस्था रखने और ज़बान से कहने(इक़रार करने), और शरीर से अमल करने को ईमान कहते हैं। अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ﴾ (١)

(ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़ कर फरमांबरदार हो गये) हालाँकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिल में दाखिल ही नहीं हुआ।)

हसन बसरी रहिमहुल्लाह कहते हैंः कि ईमान इच्छा और दावा करने का नाम नहीं है बल्कि ईमान यह है जो हृदय में पाया जाये और कार्यो से उसको सच कर दिखाये।

---

(1) अल-हुजरातः 14

प्रश्नः मरने के पश्चात दुबारा ज़िन्दा होने का क्या अर्थ है? और उसका इनकार करने का क्या हुक्म है?

उत्तरः मरने के पश्चात दुबारा ज़िन्दा किये जाने पर ईमान रखना अनिवार्य है, और यह अल्लाह पर ईमान का एक अटूट (अतिआवश्यक) हिस्सा है। जिस हस्ती (अल्लाह) ने संसार की सारी चीजों को अदम (अनस्तित्व) से पैदा किया वह उन सारी चीजो़ को दुबारा पैदा करने की शक्ति रखती है।, और इस का इनकार करने वाला काफिर है और वह सदा जहन्नम में रहेगा। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَضَرَبَ لَنَا مَثَلا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ﴾ (١)

(और उसने हमारे लिए मिसाल बयान की और अपनी (मूल) पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली हड्डियों को कौन जिन्दा कर सकता है। कह दीजिए कि उन्हें वह जिन्दा करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया जो सब प्रकार (तरह) की पैदाईश को अच्छी तरह जानने वाला है।)

प्रश्नः अल्लाह ने हमें किस लिए जन्म दिया है?

उत्तरः अल्लाह ने हमें पैदा किया है कि हम उसकी पूजा करें

---

(1)यासीनः 78-79

और उस के साथ किसी को साझी न ठहरायें।

इसकी दलील अल्लाह का यह फरमान है:

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنسَ إِلا لِيَعْبُدُونِ﴾ (١)

(मैने जिन्नात और इन्सान को सिर्फ इस लिए पैदा किया है कि केवल वह मेरी ही इबादत करें)

रसूल ﷺ का इर्शाद है:

"حَقّ اللهِ عَلَى العِبَادِ أَن يَعبُدُوه ، وَلا يُشرِكُوا بِهِ شَيئاً" (٢)

अल्लाह का अधिकार अपने बन्दों पर यह है कि वह उसकी इबादत (पूजा) करें और उसके साथ किसी को साझी न ठहरायें।

प्रश्नः इबादत (पूजा) किसे कहते हैं।

उत्तरः इबादत (पूजा) हर उस बात और काम का नाम है जिसे अल्लाह तआला पसंद करे जैसे दुआ, नमाज़, नम्रता आदि। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿قُلْ إِنَّ صَلاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ (٣)

(आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज और मेरी सभी इबादतें और मेरी ज़िन्दगी और मौत सारी दुनिया के रब के लिए है।)

और हदीस कुदसी है:

---

(1)अल-ज़ारियातः 56

(2)बुखारी, मुस्लिम

(3) अल-अनआमः 162

وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مما افْتَرَضْتُه عَلَيْهِ.(١)

(मेरी कुरबत (निकटता) हासिल करने के लिए मेरा बन्दा (भक्त) जो भी कार्य करता है उन में से मेरे नज़दीक सब से ज्यादा पसन्दीदा वह काम हैं जिसे मै ने उस पर अनिवार्य किया है)

प्रश्नः इबादत (उपासना) कितने प्रकार के हैं?

उत्तरः इबादत की बहुत सी किस्में हैं जिनमें से कुछ यह हैं: दुआ, डर, आस, तवक्कुल, रूचि और भय, कुरबानी, नज़र व नयाज़, रुकूअ और सजदा, तवाफ और कसम खाना, और इसके इलावा इबादत की और बहुत सारी मशरूअ किसमें हैं।

प्रश्नः हम अल्लाह की इबादत कैसे करें।

उत्तरः जिस तरह अल्लाह और उस के रसूल ने हमें आज्ञा दिया है। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ﴾(٢)

(हे ईमानवालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने अमल को बर्बाद न करो।)

और नबी अकरम ﷺ ने फरमायाः

---

(1) बुखारी
(2) मुहम्मदः 33

"مَنْ عَمِلَ عَملاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ"[1]

(जिसने हमारे आज्ञा के बिना कोई काम किया तो वह बेकार है)।

प्रश्नः क्या हम अल्लाह की उपासना भय ओर आस के साथ करें?

उत्तरः हाँ, हम अल्लाह की इबादत भय और इच्छा के साथ करें। अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को आदेश देते हुये फरमाया :

﴿ وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ﴾[2]

(और डर व उम्मीद के साथ उसकी इबादत करो)

नबी ﷺ का फरमान है:

"أَسْأَلُ اللهَ الجَنَّةَ ، وَأَعُوذُ بِهِ مِنَ النَّارِ"[3]

(मैं अल्लाह से जन्नत (स्वर्ग) माँगता हूँ, और जहन्नम (नरख) से पनाह चाहता हूँ)

प्रश्नः इबादत में एहसान क्या है?

उत्तरः इबादत में अल्लाह का ध्यानमग्नता ही एहसान है,

---

(1) मुस्लिम
(2) अल- आराफ 56
(3) अबूदाऊद

अल्लाह का इर्शाद हैः

﴿الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ﴾ (1)

(जो तुझे देखता रहता है जबकि तू खड़ा होता है। और सज्दा (नमन) करने वालों के बीच तेरा घूमना-फिरना भी)

और नबी ﷺ ने फरमायाः

"الإحسانُ أنْ تعبُدَ اللهَ كأنّكَ تَرَاهُ فإن لَمْ تكُنْ تَرَاهُ فإنّه يَرَاكَ" (2)

(एहसान का अर्थ यह है कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे कि तूम अल्लाह को देख रहे हो, और अगर यह नहीं कर सकते तो इतना ख्याल रहे कि अल्लाह तुम्हें अवश्य देख रहा है।)

---

(1) अल- शुअराअ् 218-219

(2) मुस्लिम

तौहीद की किस्में और उसके लाभ

प्रश्नः अल्लाह ने रसूलों को किस लिए भेजा।

उत्तरः अल्लाह ने रसूलों को इस लिए भेजा कि वह लोगों को अल्लाह की इबादत की तरफ बुलायें और उसके साथ शिर्क करने से रोकें।

अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولاً أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ (١)

(और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो)! केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और तागूत (अल्लाह के सिवा सभी झूठे माबूदों) से बचो।)

तागूतः उस माबूद को कहते हैं जिसकी लोग उपासना करते हैं और अल्लाह के सिवा उसे पुकारते हैं और वह लोगों की इस उपासना से खुश हो।

नबी करीम ﷺ का फरमान है:

"الأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ... وَدِينُهُم وَاحِدٌ" (٢)

(सारे रसूल (संदेष्टा) आपस में भाई भाई हैं... और उन सब का धर्म एक है।) अर्थात : सभी रसूलों ने तौहीद की दावत दी।

प्रश्नः तौहीद रुबूबियत क्या है?

---

(1) अल- नहल 36

(2) बूखारी मुस्लिम

उत्तर: अल्लाह को उसके कामों में एक मानना तौहीद रबूबियत है, जैसे जन्म देना,रोजी देना, जिलाना और मृत्य देना, लाभ और घाटा पहुँचाना आदि, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ (١)

(सब तारीफें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसार का पालनहार है)

और नबी ﷺ का फरमान है:

"... أَنْتَ رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ..." (٢)

(तू ही आकाशों और धर्ती का रब है)

प्रश्न: तौहीद ऊलूहियत किसे कहते हैं?

उत्तर: सारी उपासना सिर्फ अल्लाह के लिए करना (और उसके साथ शिर्क (बहुदेवाद) न करना) तौहीद ऊलूहियत है, जैसे प्रार्थना, जानवर ज़ब्ह करना नज़र व नियाज़, भय और उम्मदीद, भरोसा और मदद माँगना आदि। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ﴾ (٣)

(और तुम सब का माबूद एक (अल्लाह) ही है उसके सिवाय कोई सच्चा माबूद नही, वह बहुत कृपालू और दयालू है।)

और नबी ﷺ का फरमान है:

---

(1) अल- फातिहा 2

(2) बुखारी मुस्लिम।

(3) अल- बक़रा 163

"فَلْيَكُنْ أَوَّلَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ، شَهَادَةُ أَنْ لا إِلَهَ إِلاَّ اللهُ" (١)

(तुम लोगों को सब से पहले इस बात की तरफ बुलाना कि वह गवाही दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य (माबूद) नहीं) और बुखारी व मुस्लिम की रिवायत में है :

"إِلَى أَنْ يُوَحِّدُوا اللهَ" (٢)

(अल्लाह को एक जानें और मानें)

प्रश्नः तौहीद रुबूबियत और तौहीद उलूहियत का क्या मकसद(उद्देश्य) है?

उत्तरः तौहीद उलूहियत और तौहीद रुबूबियत का मक़सद यह है कि लोग अपने पालनहार की बड़ाई को पहचानें ताकि अपनी सारी इबादात में उसको अकेला मानें, और जीवन के सभी मार्गों पर उसकी पैरवी करें, ईमान उनके दिलों में बस जाये और वास्तव में वह अमली रूप में ढल जाए।

प्रश्नः तौहीद असमा और सिफात से क्या मुराद है?

उत्तरः अल्लाह ने अपनी पुस्तक (कुरआन) में स्वयं अपने लिए जो विशेषताऐं बयान की हैं या उसके संदेश्वाहक मुहम्मद ﷺ ने अपनी सहीह हदीसों में उसकी जो विशेषताऐं बयान की हैं उन्हें उसी तरह से मान लेना तौहीद असमाअ् और सिफात कहलाता है, बिना किसी तावील (हेर फेर) बिना किसी से मिसाल दिये

(1) बुखारी मुस्लिम
(2) बुखारी

बिना उसकी कैफियत (वास्तविक्ता) बयान किये हुए बिना उसको अर्थहीन किए हुये वास्तविक रूप से उसी तरह साबित करना जिस तरह उसके शायान शान है।, जैसे अल्लाह का अरश पर होना, नुजूल फरमाना, और उसका हाथ होना इतियादि।

अल्लाह का इर्शाद है:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ (١)

(उस जैसी कोई चीज़ नहीं ; वह सुनने वाला देखने वाला है।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"يَنْزِلُ اللهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا" (٢)

(अल्लाह हर रात को आसमान दुनिया की ओर उतरता है) उसका यह उतरना उसी के शायान शान है उसकी पैदा की हुई किसी वस्तु के मुशाबे कदापि नहीं।

प्रश्नः अल्लाह कहाँ है?

उत्तरः अल्लाह तआला आकाश में अर्श के ऊपर पर है, अल्लाह का इर्शाद है: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ (٣)

(जो रहमान है अर्श पर क़ायम है।)

नबी ﷺ का फरमान है:

---

(1) अल- शोअराअ् 11

(2) मुस्लिम

(3) ताहाः 5

"إِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَاباً قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الخَلْقَ، إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي، فَهُوَ مَكْتُوبٌ عِنْدَه فَوقَ العَرْشِ" (١)

(बेशक अल्लाह ने मखलूक़ (संसार और उसकी सब चीजें) को पैदा करने से पहले एक दस्तावेज़ लिखा, वह यह कि मेरी दया मेरे क्रोध पर भारी हो चुकी है, और यह अर्श पर उसके पास लिखी हुई महफूज(सुरक्षित) हैं)

जिसने अल्लाह के अर्श के ऊपर होने का इनकार किया उसने कुरआन और हदीस का विरोध किया।

प्रश्नः क्या अल्लाह हमारे साथ है?

उत्तरः अल्लाह अपने ज्ञान के द्धारा हमारे साथ है वह हमें सुनता और देखता है।

अल्लाह का इर्शाद है:

﴿قَالَ لا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَى﴾ (٢)

(जवाब मिला कि तुम दोनों कभी न डरो मैं तुम्हारे साथ हूँ सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ)

नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنَّكُم تَدْعُونَ سَمِيعاً قَرِيباً وَهُوَ مَعَكُم" (٣)

---

(1) बुखारी
(2) ताहा 46
(3) मुस्लिम

(तुम एक ऐसी हस्ती को पुकार रहे हो जो सुनने वाली और क़रीब है, और वह (अपरे ज्ञान के द्धारा तुम्हारे साथ है))।

प्रश्नः तौहीद के क्या लाभ हैं?

उत्तरः तौहीद के लाभ यह हैं कि मनुष्य आखिरत में हमेशगी के अज़ाब से बच जाता है, दुनिया में मार्गदर्शन प्राप्त होता है, और गुनाह माफ हो जाते हैं।

अल्लाह का इर्शाद है:

﴿الَّذِينَ آمَنُواْ وَلَمْ يَلْبِسُواْ إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُوْلَئِكَ لَهُمُ الأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ﴾ (١)

(जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को किसी शिर्क से लिप्त नहीं किया उन्ही के लिए अमन है और वही सीधे रास्ते पर हैं।)

नबी ﷺ का फरमान है:

" حَقّ العِبَادِ عَلَى اللهِ أَن لا يُعَذّب مَن لا يُشرِك بِه شَيئاً " (٢)

(बन्दों का अधिकार अल्लाह पर यह है कि जो उसके साथ किसी को शरीक न करे तो वह उसे दण्ड न दे)

---

(1) अल अनआम 82

(2) बुखारी, मुस्लिम

"ला इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ और उसकी शर्तें"

प्रश्नः लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ और उकसी शर्तें क्या हैं?

उत्तरः मेरे मुसलमान भाइयो! अल्लाह हमें और आपको हिदायत दे -यह बात ज़ान लो कि "लाइलाहा इल्लल्लाह" जन्नत की कुंजी है। और इस कुंजी के घाट ही "लाइलाहा इल्लल्लाह" की शर्तें हैं जो निम्नलिखित हैं:

१. "लाइलाहा इल्लल्लाह" के अर्थ का ज्ञान (इल्म) होनाः इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी और के सच्चा माबूद होने का इनकार किया जाये और केवल अकेले अल्लाह को चच्चा माबूद माना जाये। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (١)

(तो (हे नबी), आप यकीन कर लें कि अल्लाह के सिवाय कोई (सच्चा) (माबूद) नहीं)

और नबी ﷺ का फ़रमान है:

"مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعلَمُ أنّه لا إِلَهَ إلاّ اللهُ دَخَلَ الجَنَّةَ" (٢)

(जिस किसी की मृत्य हुयी और वह लाइलाहा इल्लल्लाह पर यकीन रखता था वह स्वर्ग में दाखिल हुआ)

---

(1) मुहम्मद 19

(2) मुस्लिम

२. ऐसा यक़ीन जो शक को दूर करदेः और वह इस प्रकार कि बिना किसी सन्देह और शंका के दिल को उसपर यक़ीन हो। अल्लाह का इर्शाद हैः

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا.... ﴾ (١)

(ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें।)

नबी ﷺ का फरमान हैः

" أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ ، لا يَلْقِي اللهَ بِهِمَا عَبْدٌ غَيرَ شَاكٍّ ، فَيُحجَبَ عَنِ الجَنَّةِ " (٢)

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मैं अल्लाह का संदेशवाहक हूँ, जो भी बन्दा बिना किसी सन्देह के इस विश्वास के साथ अल्लाह से मिलेगा वह जन्नत से रोका नहीं जायेगा।)

३. इस कलिमा के तक़ाज़ों को हृदय व ज़ुबान से स्वीकार करना, अल्लाह ने मुशरिकीन के विषय में बयान करते हुए इर्शाद फरमायाः

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لا إِلَهَ إِلا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ❁ وَيَقُولُونَ

---

(1) अलः हुजरात 15
(2) मुस्लिम

﴿أَئِنَّا لَتَارِكُوا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ﴾ (١)

(ये वे (लोग) हैं कि जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य (माबूद) नहीं, तो यह घमण्ड करते थे। और कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने शायर की बात पर छोड़ दें।)

नबी ﷺ का फ़रमान है:

" أُمِرتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لا إِلَهَ إِلاَّ الله ، فَمَنْ قَالَ لا إِلَهَ إلا الله فَقَد عَصمَ مِنِّي مَالَه وَنَفسه إِلاَّ بِحَقِّ الإِسْلام وَحِسَابه عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ" (٢)

(मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वह कहें अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, जिसने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा तो उसने अपने धन और जान को मुझ से बचा लिया सिवाय इस्लामी हक़ के और उसका हिसाब अल्लाह के जिम्मे है।)

४. यह कलिमा जिस बात पर दलालत करता है उसके सामने अपने आपको झुका देना और उसका पालन करनाः अल्लह का इर्शाद है : ﴿وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ﴾ (٣)

---

(1) अलः साफ़्फ़ात 35-36
(2) बुखारी , मुस्लिम
(3) अलः ज़ुमर 54

(और तुम सब अपने रब की तरफ झुक पड़ो और उसका आज्ञापालन (पैरवी) किये जाओ।)

५. ऐसी सच्चाइ जिसमें झूठ न हो, और वह इस प्रकार कि सच्चे दिल से उसका इक़रार करे। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿الم * أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لا يُفْتَنُونَ * وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ﴾ (١)

(अलिफ,लाम,मीम। क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उनके केवल इस क़ौल पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना इम्तिहान लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे। उनसे पहले के लोगों को भी हम ने अच्छी तरह जाँचा, बेशक अल्लाह (तआला) उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी जान लेगा जो झूठे हैं।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَن لا إِلَهَ إِلا الله، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُه صِدقاً مِن قَلْبِه إِلاَّ حَرَّمَه الله عَلَى النَّار" (٢)

(जिसने भी गवाही दी कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा पूज्य नहीं और सच्चे दिल से कहा कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे

(1) अलः अनकबूत 1-3

(2) बुखारी, मुस्लिम

और संदेश्वाहक हैं तो अल्लाह ने उसके ऊपर नरक को हराम कर दिया)

६. इख़्लास ऐसा अ़मल जो नेक नीयती से किया जाये और तमाम शिर्कों से खाली हो। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾ (١)

(उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध (खालिस) कर रखें)

नबी ﷺ का फरमान है:

"أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي مَنْ قَالَ لا إِلَهَ إِلاَّ اللهُ خَالِصاً مِنْ قَلْبِهِ، أَوْ نَفْسِهِ" (٢)

(मेरी शिफारिश से सबसे अधिक लाभ उस आदमी को होगा जिसने अपने सच्चे दिल से लाइलाहा इल्लल्लाह कहा हो)

नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلا اللهُ يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ" (٣)

(बेशक अल्लाह ने उस आदमी पर नरक को हराम कर दिया

---

(1) अल- बय्यना 5
(2) बुखारी जिलद 1-193
(3) मुस्लिम जिलद 1-456

है जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए लाइलाहा इल्लल्लाह कहा ।)

७. कलिमा तैयिबा से प्रेम, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَاداً يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُواْ أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ﴾ (١)

(और कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"ثلاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلاوَةَ الإِيمَان: أَن يَكُونَ اللهُ وَرَسُولُه أَحَبَّ إِلَيهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَأَن يُحِبَّ المَرءَ لا يُحِبُّه إِلا للهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الكُفْرِ بَعدَ إِذْ أَنْقَذَه اللهُ مِنهُ ، كَمَا يَكرَه أَن يُقذَفَ فِي النَّارِ" (٢)

(तीन चीजें जिस आदमी के अन्दर होंगी वह ईमान की मिठास को चखेगा। यह कि अल्लाह और उसके रसूल उसको सबसे अधिक प्रिय हूँ। किसी आदमी से केवल अल्लाह के लिए प्रेम हो। और यह कि ना पसन्द करता हो कुफ्र में लौटना ईमान

(1) अल-बक़रा 165
(2) बुखारी, मुस्लिम

लाने के बाद जैसा कि वह ना पसन्द करता है कि आग में डाला जाये।)

८. तागूतों (अल्लाह के अतिरिक्त माबूदों) का इन्कार करता हो, और अल्लाह पर ईमान रखता हो उसके पालनहार और माबूद बरहक़ होने पर। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىَ لاَ انفِصَامَ لَهَا وَاللّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ (١)

(जो इंसान तागूत (अल्लाह तआला के सिवाय दूसरे देवों) को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उसने मजबूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटे गा और अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।) नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ قَالَ لا إِلَه إِلا اللهُ ، وَكَفَرَ بِمَا يُعبَد مِن دُون اللهِ حَرُم مَالُه وَدَمُه" (٢)

(जिसने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा, और अल्लाह के सिवा पूजी जाने वाली चीज़ों का इनकार किया उसका धन और रक्त हराम है)

---

(1) अल-बक़रा 256
(2) मुस्लिम

तौहीद और आस्था का एहतमाम

प्रश्नः तौहीद की अहमियत सबसे ज्यादा क्यों है?

उत्तरः तौहीद की विशेषता इन कारणों से हैः

१. तौहीद (शिर्क का विपरीत) ही वह बुनियादी स्तंभ है जिस पर इस्लाम का आधार है। और इसका प्रदर्शन लाइलाहा इल्लल्लाह और मुहम्मददुर्रसूलुल्लाह की गवाही से होता है।

२. तौहीद के द्धारा ही काफिर इस्लाम में दाखिल होता है, जिसके कारण वह क़त्ल नहीं किया जाता। और मुसलमान अगर उसका मजाक़ उड़ाता है या इनकार करता है तो अपने धर्म से निकल जाता है और काफिर हो जाने के कारण क़त्ल किया जाता है।

३. सारे पैगमबरों ने अपनी उम्मत को तौहीद ही की दावत दी। अल्लाह का इर्शाद हैः

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُواْ اللّهَ وَاجْتَنِبُواْ الطَّاغُوتَ﴾(1)

(और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो) केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और तागूत (उसके सिवाय सभी झूठे माबूद) से बचो)

४. तौहीद ही के लिए अल्लाह ने संसार को बनाया

---

(1) अल-नहल 36

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنسَ إِلا لِيَعْبُدُون﴾ (١)

(मैं ने जिन्नात और इन्सानों को इसलिए पैदा किया है कि केवल वह हमारी इबादत करें।)

५. तौहीद में तौहीद रुबूबियत, तौहीद उलूहियत, तौहीद अस्मा व सिफात और हर प्रकार की इबादत सम्मिलित हैं।

६. तौहीद अस्मा व सिफात बहुत ही अहम हैं, मैं एक मुस्लिम नवजवान से मिला जो कह रहा था : "अल्लाह हर जगह" है तो मैं ने उस से कहा अगर उसका कहना यह है कि अल्लाह स्वयं (हर जगह) मौजूद है तो यह बहुत बड़ी गलती है। इसलिए कि अल्लाह का इर्शाद है:

﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ (٢)

(जो रहमान है अर्श पर कायम है)।

और अगर उस का अर्थ यह है कि वह हमें अपनी ज्ञानता से देख रहा है या सुन रहा है तो यह सही है।)

७. तौहीद ही के कारण इनसान को दुनिया व आखिरत में कामयाबी हासिल होगी।

८. तौहीद ही ने अरब को शिर्क,जुल्म,जाहिलियत, फूट भेद भाव से न्याय और इज़्ज़त, ज्ञान एकता और बराबरी की तरफ निकाला।

---

(1) अल-ज़ारियात 56

(2) ताहा 5

९. तौहीद ही के कारण मुसलमानों ने शहरों को फतह किया और लोगों को तागूतों की इबादत से अल्लााह की इबादत की तरफ निकाला और अधर्म से इस्लाम की तरफ बुलाया।

१०. तौहीद ही इनसान को जिहाद, कुरबानी और फिदाईयित पर उभारता है।

११. तौहीद ही ने अरब और अजम (गैर अरब) को एक उम्मत बनाया, इसी लिए जब मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहि० ने हाजियों के जरिये तौहीद का संदेश हिनदुस्तान तक पहुँचाया तो अंग्रेज उस से भयभीत हो गये, इसलिए कि तौहीद तमाम मुसलमानों को एक पलेटफार्म पर जमा कर देती है।

१२. तौहीद ही से मुजाहिद का ठिकाना तय होगा अगर वह मोवह्हिद है तो जन्नत मिलेगी, और अगर मुशरिकों में से हैं तो जहन्नम।

१३. तौहीद ही के लिए मुसलमानों ने लड़ाइयाँ लड़ीं और मुसलमान इस रास्ते में शहीद हुए और तौहीद ही के कारण मुसलमानों को कामयाबी मिली, और उन्हों ने संसार के एक बहुत बड़े हिस्से पर हुकूमत कायम की थी, आज भी अगर मुसलमान तौहीद को अपना लें तो उनकी इज्ज़त और हुकूमत लौट आयेगी।

अल्लाह का इर्शाद है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ﴾ (١)

(हे ईमानवालो अगर तुम अल्लाह (धर्म) की मदद करते रहो गे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम मज़बूत रखेगा)

(1) मुहम्मद 7

अमल के कुबूलियत की शर्तें

प्रश्नः अमल कबूल होने के लिए क्या शर्ते हैं?

उत्तरः अमल क़बूल होने के लिए चार शर्तें है।

१. अल्लाह पर ईमान लाना और उसको एक जानना। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا﴾ (١)

(जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम भी किये, बेशक उनके लिए फिरदौस (जन्नत का सबसे ऊँचा मुकाम) के बाग़ों में स्वागत है।) नबी ﷺ का फरमान है:

"قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ، ثُمَّ اسْتَقِمْ" (٢)

(कहदीजिए मैं अल्लाह पर ईमान लाया और फिर उस पर क़ायम रह)

२. इख़्लासः केवल अल्लाह के लिए कार्य करना, दिखलावे या नाम के लिए नहीं। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ﴾ (٣)

---

(1) अल-कहफ 107

(2) मुस्लिम

(3) अल-जुमर 2

(तो आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए दीन को शुद्ध (खालिस) करते हुए) नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ قَالَ لا إِلَه إِلا الله مُخْلِصاً دَخَلَ الجَنَّةَ" (١)

(जिसने इख़्लास के साथ लाइलाहा इल्लल्लाह कहा वह स्वर्ग मे जायेगा।)

३. रसूल के लाये हुए धर्म के अनुसार पैरवी करना। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾ (٢)

(और तुम्हें जो कुछ रसूल दें तो ले लो और जिस से रोकें रुक जाओ)

नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيهِ أَمْرُنَا فَهُو رَدٌّ" (٣)

(जिस ने कोई कार्य किया जिसका मैं ने आदेश नहीं दिया तो वह कार्य ठुकराया हुआ है)

४. कुर्फ या शिर्क कर के अपना ईमान नाक़िस ना करे इस तरह कि अल्लाह के साथ नबियों और वलियों को पुकारे ।

नबी ﷺ का फरमान है:

---

(1) अलबज़्ज़ार
(2) अल-हशर 7
(3) मुस्लिम

"الدّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ"(١)

(दुआ ही इबादत है।) अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلاَ تَدْعُ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ﴾(٢)

(और अल्लाह को छोड़ कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई फायेदा पहुँचा सके और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे।) और अल्लाह का इर्शाद है:

﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾(٣)

(अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और निश्चित (यक़ीनी) रूप से तू नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेगा।)

प्रश्नः नियत की परिभाषा क्या है।

उत्तरः नियतः दिल से इरादा करने को कहते हैं और शब्दों से नियत जाइज नहीं इसलिए कि सहाबा और रसूल ﷺ ने शब्दों से नियत नहीं की। अल्लाह का इर्शाद है:

---

(1) तिर्मज़ी
(2) युनुस 106
(3) अल-ज़ुमर 65

﴿وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ﴾ (١)

(और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीने में (छिपी हुयी) बातों को भी अच्छी तरह जानता है।) नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امرِىءٍ مَّا نَوَى". (٢)

(बेशक अमल का दारोमदार (और उसकी कुबूलियत) नीयत पर है और हर आदमी को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की है)।

---

(1) अल-मुल्क 13
(2) बुखारी, मुस्लिम

शिर्क अकबर और उसकी किस्में

प्रश्नः शिर्क अकबर क्या है?

उत्तरः शिर्क अकबर यह है कि किसी इबादत को अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे के लिए किया जाये। जैसे अल्लाह को छोड़कर किसी दूसरे से दुआ करनौ, उसके लिए कुरबानी करना आदि, अल्लाह का इर्शाद हैः

﴿وَلاَ تَدْعُ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ﴾ (١)

(और अल्लाह को छोड़ कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई फाइदा पहुँचा सके और न कोई नुकसान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे।)

नबी ﷺ का फरमान हैः

"أَكْبَرُ الكَبَائِرِ: الإِشْرَاكُ بِاللهِ وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ، وَشَهَادَةُ الزُّورِ" (٢)

(सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ साझी ठहरान, माता पिता की नाफरमानी करना और झूठी गवाही देना है।)

प्रश्नः अल्लाह के यहाँ सबसे बड़ा गुनाह क्या है?

---

(1) युनुस 106
(2) बुखारी

उत्तरः अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह शिर्क अकबर है, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿يَا بُنَيَّ لا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (١)

(हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना, बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।) और जब नबी ﷺ से पूछा गया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आप ﷺ ने फरमाया:

"أَنْ تَجْعَلَ لِلَّهِ نِداً وَهُوَ خَلَقَكَ" (٢)

(यह कि तुम अल्लाह के साथ किसी को साझी न ठहराओ हालाँकि वह तुम को पैदा करने वाला है।)

प्रश्नः क्या इस उम्मत में शिर्क मौजूद है?

उत्तरः हाँ, और अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلاَّ وَهُم مُّشْرِكُونَ﴾ (٣)

(और उन में से ज़्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशरिक ही हैं।)

नबी ﷺ का फरमान है:

---

(1) लुक़मान 12
(2) बुखारी, मुस्लिम
(3) युसुफ 106

"لا تَقُومُ السّاعَةُ حَتّى تَلْحَقَ قَبائِلُ مِنْ أُمَّتِي بِالْمُشْرِكِينَ، وَحَتّى تَعْبُدَ الأَوْثَانَ" (١)

(क़्यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मुशरिकों से मिल जायेंगे, और मुर्ति पूजा करने लगेंगे।)

प्रश्नः मुर्दों और गायबीन (अनुपस्थित) को पुकारने का क्या हुक्म है?

उत्तरः उनको पुकारना शिर्क अकबर है अल्लाह का इर्शाद है:

﴿فَلا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ﴾ (٢)

(इस लिए तू अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को न पुकार कि तू भी सज़ा पाने वालों में से हो जाये।) नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِن دُونِ اللهِ نِداً دَخَلَ النّارَ" (٣)

(जिस किसी की मृत्यु हुयी और वह अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता था तो नरक में जायेगा)

प्रश्नः क्या दुआ इबादत है?

उत्तरः हाँ, दुआ इबादत है, अल्लाह का इर्शाद है:

---

(1) तिर्मिज़ी
(2) अल-शुअ्रा 213
(3) बुखारी

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ (١)

(और तुम्हारे रब का फरमान है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूगां, यकीन मानों कि जो लोग मेरी इबादत से खुदसरी करते हैं अनकरीब वह जहन्नम में पहुँच जायेंगे।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ" (٢) (दुआ इबादत है।)

प्रश्नः क्या मुर्दे पुकार को सुनते हैं?

उत्तरः मुर्दे पुकार को नही सुनते, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ﴾ (٣)

(और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।)

﴿إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ وَالْمَوْتَى يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ﴾ (٤)

(वही लोग कुबूल करते हैं जो सुनते हैं, और मरे हुये लोगों को

(1) ग़ाफिर 60
(2) तिर्मज़ी
(3) फातिर 22
(4) अल-अनआम् 36

अल्लाह (तआला) जिन्दा करके उठायेगा, फिर सब उसी (अल्लाह ही) की तरफ लाये जायेंगे।) नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنَّ لِلّٰهِ مَلائِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الأَرْضِ يُبَلِّغُونِي عَنْ أُمَّتِي السَّلام"(1)

(बेशक अल्लाह के फरिश्ते ज़मीन में घूमते हैं, और वह मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुँचाते हैं) जब रसूल ﷺ को सलाम बेगैर फरिश्तों के नहीं पहुँता है तो दूसरों को कैसे पहुँचे गा।

प्रश्नःक्या मुर्दों और गायबीन से फर्याद कर सकते हैं?

उत्तरः उनसे मदद नहीं माँग सकते, केवल अल्लाह से सहायता माँगें। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللّهِ لاَ يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ۞ أَمْواتٌ غَيْرُ أَحْيَاء وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ﴾(2)

(और जिन जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के सिवाय पुकारते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये हुए है। मुर्दा हैं जिन्दा नहीं,उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि कब उठाये जायेंगे।) अल्लाह का इर्शाद है:

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ﴾(3)

---

(1) हाकिम
(2) अल-नहल 20
(3) अल-अनफाल 9

(उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने रब से दुआ कर रहे थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली।)

नबी ﷺ का फरमान हैः

"يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ، بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ" (١)

(ऐ हमेशा रहने वाले संसार को संभालने वाले मैं तेरी रहमत से सहायता मांगता हूँ।)

प्रश्नः क्या जिन्दों से फर्याद की जा सकती हैं?

उत्तरः हाँ, जिन चीज़ों की सहायता पर वह कुदरत रखता हो, अल्लाह ने मूसा के बारे में इर्शाद फरमायाः

﴿فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِن شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَزَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ﴾ (٢)

(उसकी जमाअत वाले ने उसके खिलाफ जो उसके दुश्मनों में से था उस से मदद माँगी, जिस पर मूसा ने उसे घूंसा मारा जिस से वह मर गया।)

प्रश्नः अल्लाह के सिवाय किसी से मदद माँगी जा सकती है?

उत्तरः नहीं, जिन चीज़ों पर केवल अल्लाह को कुदरत हो तो दूसरों से मदद नहीं माँगी जा सकती, अल्लाह का इर्शाद हैः

---

(1) तिर्मिजी
(2) अल-क़सस 15

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ (١)

(हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।) नबी ﷺ का फरमान है:

"وَإِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللهَ ، وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللهِ" (٢)

(जब सवाल करो तो अल्लाह से करो, और जब सहायता माँगो तो अल्लाह से माँगो,)

प्रश्नः क्या हम जीवित से सहायता माँग सकते हैं?

उत्तरः हाँ, जिस चीज़ पर वह कुदरत रखते हैं जैसे कर्ज़, सहायता। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى الْبرِّ وَالتَّقْوَى﴾ (٣)

(और नेकी और परहेज़गारी पर आपस में मदद करो।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"وَاللهُ فِي عَوْنِ العَبدِ، مَا كَانَ العَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيْه" (٤)

(अल्लाह बन्दा की सहायता करता रहता है जबतक कि बन्दा अपने भाई की सहायता करता है।)

---

(1) अल-फातिहा 5
(2) तिर्मज़ी
(3) अल-माइदा 2
(4) मुस्लिम

किन्तु शिफा, रिज़क़ हिदायत और इस जैसी चीज़ें केवल अल्लाह से माँगी जायें, इसलिए कि जीवित लोग इस से विवश हैं, तो मृत्यु आदमी कैसे दे सकता है। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ﴾ (١)

(जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत करता है। वही है जो मुझे खिलाता -पिलाता है। तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग (शिफा अता) करता है।)

प्रश्नः क्या अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे के लिए नज़्र(चड़ावा) जायज़ है?

उत्तरः नही, अल्लाह के सिवाय किसी के लिए नज़्र जायज़ नहीं, अल्लाह का इर्शाद है कुरआन में इमरान की औरत के बारे में:

﴿رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا﴾ (٢)

(हे मेरे पालनहार! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से आज़ाद करने की मन्नत मान ली)

नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللهَ فَلْيُطِعْهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيه، فَلا يَعْصِه" (٣)

(1) अल-शोअराअ् 78,79,80
(2) अल-इमारान 35
(3) बुखारी

(जिसने अल्लाह की आराधना की मन्नत मानी तो वह उसे पूरा करे, और जिसने अवज्ञा की मन्नत मानी तो वह उसे न करे।)

प्रश्नः क्या अल्लाह के अतिरिक्त किसी के लिए ज़बीहा जायज़ है।

उत्तरः नहीं, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ﴾ (١)

(तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"لَعَنَ اللهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللهِ" (٢)

(अल्लाह की लअ्नत है उस पर जिस ने गैरूल्लााह के लिए ज़बीहा किया।)

क़ब्रों और दरगाहों पर कुरबानी जायज़ नहीं चाहे वह अल्लाह के नाम से हो, इसलिए कि यह मुशरिकों के कार्य में से है। नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ" (٣)

(जिस ने किसी क़ौम की मुशाबहत अपनाई तो वह उन्हीं मे से है।)

---

(1) अल-कौसर 2
(2) मुस्लिम
(3) अबूदाऊद

प्रश्नः क्या तकर्रूब (निकटता) हासिल करने के लिए कब्रों का तवाफ किया जा सकता है।

उत्तरः नहीं, केवल खाना काबा़ का तवाफ कर सकते हैं, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ﴾ (١)

(और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ करें)

नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ طَافَ بِالْبَيْتِ سَبْعاً وَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ، كَانَ كَعِتْقِ رَقَبَة" (٢)

(जिस ने अल्लाह के घर का सात बार तवाफ़ किया और दो रकुअत नमाज़ अदा की , तो वह एक गुलाम आजाद करने के समान है।)

प्रश्नः जादू का क्या हुक्म है?

उत्तरः जादू कबीरा गुनाहों में से है, और कभी कभार वह कुफ्र भी होता है, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلَكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُواْ يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ﴾ (٣)

(बल्कि यह कुफ्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे।)

नबी ﷺ का फरमान है:

---

(1) अल-हज्ज़ 29
(2) इब्ने माजा़
(3) अल-बक़रा 102

اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ: الشِّرْكُ بِاللهِ وَالسِّحْرُ... (١)

(सात हिलाकत वाली चीज़ों से बचो! अल्लाह के साथ शिर्क करने से और जादू से.....) कभी कभार जादूगर मुशिरक या काफिर या फसादी हो जाता है जिसको कत्ल करना अनिवार्य हो जाता है क़सास या हद या उसके कार्यों के कारण जो वह दीन में फितना फैलाता है, या उसके इच्छुक लोगों के लिए फसाद को सहल करता है, या जुर्म को छुपाता है, या मर्द और औरत के बीच जुदाई कराता है, या ऐसा कार्य करता है जिस से जीवन प्रभावित होता है, या आक़िल को पागल बना देता है इतियादि...

प्रश्नः क्या गैब की जानकारी देने वाले नजूमी और काहिन को सच्चा माना जा सकता है।?

उत्तरः नहीं, उनको सच्चा नहीं माना जा सकता। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿قُل لا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ الْغَيْبَ إِلا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ﴾ (٢)

(कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाय कोई भी ग़ैब (की बात) नहीं जानता)

---

(1) मुस्लिम
(2) अल-नमल् 65

नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ أَتَي عَرّافاً، أَوْ كَاهِناً، فَصَدّقَه بِمَا يَقُولُ، فَقَد كَفَر بِمَا أُنزِلَ عَلَى مُحَمّد"(۱)

(जो कोई किसी काहिन या नजूमी के पास गया, और उसकी बात को सच समझा तो उसने उस चीज का इनकार किया जो मुहम्मद ﷺ ले कर आये)

प्रश्नः क्या कोई ग़ैब को जानता है?

उत्तरः नहीं, अल्लाह के सिवाय कोई ग़ैब को नहीं जानता। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ هُوَ﴾ (۲)

(और उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब की कुंजियां है जिसको सिर्फ वही जानता है।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"لا يَعْلَم الغَيْبَ إلا الله"(۳)

(ग़ैब की जानकारी केवल अल्लाह के पास है।)

---

(1) अहमद
(2) अल-अनआम 59
(3) तबरानी

शिर्क अकबर के नुक़सानात

प्रश्नः शिर्क अकबर से क्या नुक़सान हैं?

उत्तरः शिर्क अकबर नरक में दाखिल होने का कारण है। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ﴾ (١)

(क्यों कि जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा अल्लाह ने उसपर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"وَمَنْ لَقِيَ اللهَ يُشرِكُ بِهِ شَيئاً دَخَلَ النَّار" (٢)

(और जो अल्लाह से इस हाल में मिला कि उसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया तो वह जहन्नम में दाखिल हुआ।)

प्रश्नः क्या शिर्क के साथ अच्छे कार्य लाभ पुहँचाते हैं।

उत्तरः नहीं, शिर्क के साथ अच्छे कार्य से कोई लाभ नहीं, अल्लाह का पैगम्बरों के बारे में इर्शाद है:

---

(1) अल-मायदा 72
(2) मुस्लिम

﴿وَلَوْ أَشْرَكُوا۟ لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾ (١)

(और अगर वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उनके अमल बेकार हो जाते।) और हदीस कुदसी है:

" أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ، مَنْ عَمِلَ عَمَلاً أَشْرَكَ مَعِي فِيهِ غَيْرِي، تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ " (٢)

(मैं मुश्रिकों के शिर्क से अति अधिक बे नयाज हूँ, जिस किसी ने अच्छे कार्य के साथ मेरे साथ शिर्क किया, तो मैंनें उसको और उसके शिर्क को छोड़ दिया।)

प्रश्नः सूफिया के बारे में इस्लाम का क्या हुक्म है?

उत्तरः नबी ﷺ और सहाबा और ताबेईन के ज़माने में सूफिया नहीं थे। जबसे युनानी पुस्तकों का अनुवाद अरबी भाषा में हुआ तब से यह वजूद में आये।

और सूफियत बहुत सी चीजों में इस्लाम का मुखालिफ है।

१. गैरूल्लाह को पुकारना। अधिकतर सूफिया अल्लाह को छोड़ कर मुर्दो को पुकारते हैं। नबी ﷺ का फरमान है:

" الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ " (٣)

(दुआ-पुकारना ही उपासना है) अल्लाह के अतिरिक्त किसी को

---

(1) अल-अनआम 88
(2) मुस्लिम
(3) तिर्मिजी

पुकारना शिर्क अकबर है जिस से सारे अच्छे कार्य बर्बाद हो जाते हैं। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلاَ تَدْعُ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ﴾ (١)

(और अल्लाह को छोड़ कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई फायेदा पहुँचा सके और न कोई नुकसान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे।) और अल्लाह का इर्शाद है:

﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ (٢)

(अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और निश्चित (यक़ीनी) रूप से तू नुकसान उठाने वालों में से हो जायेगा।) नबी ﷺ का फरमान है:

"مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللهِ نِدّاً دَخَلَ النَّارَ" (٣)

(जिस किसी की मृत्यु हुयी और वह अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता था तो नरक में जायेगा)

२. अधिकतर सूफिया का आस्था यह है कि अल्लाह हर जगह स्वयं मौजूद है, इसके कहने वाले कुरआन की इस आयत के

(1) युनुस 106
(2) अल-जुमर 65
(3) बुखारी

विरोधी हैं।

﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ (١)

(जो रहमान है अर्श पर क़ायम है।) नबी ﷺ का फरमान है:
"إِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَاباً قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الخَلَقَ، إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي، فَهُوَ مَكْتُوبٌ عِنْدَه فَوقَ العَرْشِ" (٢)

(बेशक अल्लाह ने मखलूक़ों को पैदा करने से पहले एक दस्तावेज़ लिखा, मेरी दया मेरे क्रोध पर भारी हो चुकी है, और यह अर्श पर उसके पास लिखी हुई महफ़ूज़ है)
और अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ﴾ (٣)

(और जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है)
३. कुछ सूफिया यह आस्था रखते हैं कि अल्लाह तआला अपनी मखलूकात में हुलूल किये हुए है, चुनाँचा इब्ने अरबी जो दमशक़ में मदफ़ून है और सूफियों का अगुवा है कहता है:
बन्दा रब है और रब ही बन्दा है।

काश यह मालूम होता कि मुकल्लफ कौन है।

उनका सरदार कहता है:

---

(1) ताहा 5
(2) बुखारी
(3) अल-हदीद 4

कुत्ता और सुवर हमारे हैं इलाह।

और अल्लाह गिरजाघर का पादरी।

४. अधिकतर सूफिया यह आस्था रखते हैं कि अल्लाह ने संसार को मुहम्मद ﷺ के लिए बनाया, और यह कुरआन के विरुद्ध है:

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنسَ إِلا لِيَعْبُدُونِ﴾ (١)

(मैंने जिन्नात और इन्सान को सिर्फ इस लिए पैदा किया है कि केवल वह मेरी ही इबादत करें) और दूसरी जगह इर्शाद है:

﴿وَإِنَّ لَنَا لَلآخِرَةَ وَالأُولَى﴾ (٢)

(और हमारे ही हाथ आख़िरत और दुनिया है)

५. अधिकतर सूफिया का आस्था है कि अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को अपने नूर से पैदा किया, और सारी चीजों को उनके नूर से पैदा किया, और सबसे पहले मुहम्मद ﷺ को पैदा किया, और यह सब कुरआन के खिलाफ है:

﴿إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِن طِينٍ﴾ (٣)

(जब कि आप के रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान को बनाने वाला हूँ।)

---

(1) अल-ज़ारियात: 56
(2) अल-लैल 13
(3) साद् 71

आदम अलैहिस्सलाम ही वह पहले मनुष्य हैं जिन्हें अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया, और इन्सान के इलावा अर्श और पानी के बाद क़लम को पैदा किया। नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللهُ الْقَلَمَ" (١)

(बेशक अल्लाह ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया) और यह हदीस:

"أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللهُ نُورَ نَبِيِّكَ يَا جَابِرُ" (٢)

(ऐ जाबिर! सबसे पहले अल्लाह ने तुम्हारे नबी का नूर पैदा किया) इस हदीस की कोई सनद नहीं हैं हदीस के उलमा ने इसको बातिल और मौजूअ् कहा है।

६. सूफिया के शरीअत के विरुद्ध कार्यो में से उनका औलिया के लिए चढ़ावा चढ़ाना, नज़्र मानना, उनकी कब्रों का तवाफ करना, दरगाह बनाना, और ऐसे तरीके से अज़कार करना जो शरीअत में नहीं है,और ज़िक्र के समय नाचना, और लोहा पीटना (या बजाना), और आग का खाना, और जादू टोना करना, और लोगों का धन नाजाइज़ रास्ते से खाना... आदि।

---

(1) अहमद और तिर्मज़ी
(2) सयूती, गमारी और अलबानी ने जिक्र किया है

वसीला और शिफाअत का माँगना कैसा है

प्रश्नः अल्लाह की तरफ किस चीज़ का वसीला लिया जा सकता है?

उत्तरः वसीला जायज़ है और नाजायज़ भी।

१. जाइज़ वसीला यह है कि अल्लाह के नामों और उसकी सिफात से और नेक कार्यो से वसीला किया जाये। और इसी प्रकार जीवित नेक लोगों से दुआ के लिए कहना यह सब वसीले जायज़ हैं। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلِلّهِ الأَسْمَاء الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا﴾ (١)

(और उच्छे नाम अल्लाह ही के लिए हैं तो इसको इन्हीं नामों से पुकारो)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ وَابْتَغُواْ إِلَيهِ الْوَسِيلَةَ﴾ (٢)

(हे मुसलमानों! अल्लाह तआला से डरते रहो और उसकी ओर नज़दीकी हासिल करने की कोशिश करो।) अर्थात अल्लाह की कुरबत हासिल करो उसकी इताअत करके और ऐसा काम करके जिस से वह प्रसन्न हो। नबी ﷺ का फरमान है:

"أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ" (٣)

---

(1) अल-ज़ारियातः 56
(2) अल-ज़ारियातः 56
(3) अल-ज़ारियातः 56

(ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ हर उस नाम से जिससे तू ने अपने आप को मौसूम किया है।)

नबी ﷺ का फरमान है:

"أَعِنِّيْ عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السَّجُوْدِ" (١)

(तुम अधिक से अधिक नमाज़ पढ़ कर अपने आप पर मेरी मदद करो) इसी प्रकार गुफा वालों की कहानी, जिन्हों ने अपने नेक कार्यो के वसीले से सवाल किया, तो अल्लाह ने उनकी परेशानी दूर कर दी।

और वसीला जायज़ है अल्लाह के प्रेम और रसूल और औलिया के प्रेम से, इसलिए कि हमारा उनसे प्रेम करना नेक कार्यो से है।

२. नाजाईज़ वसीला मुर्दो को पुकारना और उनसे जरूरतों को पूरा करने के लिए सवाल करना, जैसा कि आज कल मुसलमान कर रहें हैं, यह शिर्क अकबर है। अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَلاَ تَدْعُ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ﴾ (٢)

(और अल्लाह को छोड़ कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई फायेदा पहुँचा सके और न कोई नुकसान

---

(1) अल-ज़ारियातः 56
(2) युनुस 106

पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे।)

३. जहाँ तक नबी के जाह (पद) का वसीला लेने की बात है, तो यह बिदअत है, क्यों कि सहाबा ने कभी ऐसा नहीं किया, और हज़रत उमर रजि० ने अब्बास रजि० कि जिन्दगी में उनकी दुआ को वसीला बनाया, पैग़म्बर की वफात के बाद कभी आपका वसीला नहीं लिया। कभी कभार इस तरह के वसीले से आदमी कुफ्र तक पहुँच जाता है, अगर किसी की यह आस्था है कि अल्लाह तआला किसी आदमी के वसीले का मुहताज है जैसे कि अमीर और हाकिम होते हैं। इसलिये कि उस ने खालिक़ को मखलूक़ के समान ठहर दिया, जो कि शिर्क है।

इमाम अबू हनीफा का कहना है कि अल्लाह के इलावा किसी के वास्ते से माँगने को मैं ना पसन्द करता हूँ।

प्रश्नः क्या दुआ के लिये मनुष्य के माध्यम की आवश्यक्ता है?

उत्तरः दुआ के लिए किसी इन्सान के माध्यम की आवश्यक्ता नहीं है, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ﴾ (1)

(और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में सवाल करें तो कह दीजिए कि मैं उनके बहुत क़रीब हूँ)

(1) अल-बक़रा 186

नबी ﷺ का फरमान है:

إِنَّكُم تدعُونَ سَمِيعاً قَرِيباً وَهُوَ مَعَكُم.(١)

(तुम एक ऐसी हस्ती को पुकार रहे हो जो सुनने वाली और क़रीब है, और वह (ज्ञान के द्धारा) तुम्हारे साथ है।

प्रश्नः क्या जीवित आदमी से दुआ कराई जा सकती है?

उत्तरः हाँ, जीवित मनुष्य से दुआ के लिए अनुरोध किया जा सकता है, मुर्दों से नहीं। अल्लाह तआला का इर्शाद है वह अपने रसूल ﷺ से कहता है जबकि वह जीवित थेः

﴿وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ﴾(٢)

(और अपने पापों की माफी माँगा करें और ईमान वाले मर्दों और ईमानवाली औरतों के पक्ष (हक) में।)

और सही हदीस में है:

"أَنَّ رَجُلاً ضَرِيرَ البَصرِ أَتَى النَبِي ﷺ، فَقَال : أُدعُ اللهَ أَنْ يُعَافِيْنِي قَالَ: إِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ لَكَ ، وَإِنْ شِئْتَ صَبَرْتَ فَهُـو خَيْرٌ لَكَ..." (٣)

(1) मुस्लिम
(2) मुहम्मद 19
(3) तिर्मज़ी

(ऐक अंधा आदमी रसूल ﷺ के पास आया और उसने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल आप अल्लाह से मेरे लिए दुआ कर दीजिए कि वह मुझे ठीक करदे, आप ﷺ ने फरमायाः अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए दुआ कर दूँ, और अगर चाहो तो सब्र कर लो, मगर सब्र तुम्हारे लिए बेहतर है।)

प्रश्नः रसूल ﷺ की शिफाअत हम किस से तलब करें?

उत्तरः रसूलुल्लाह की शिफाअत हम अल्लाह से तलब करें, अल्लाह का इर्शाद है: [1] ﴿قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا﴾

(कहदीजिये कि तमाम शिफारिश का मुख़तार अल्लाह ही है)
और आप ने ऐक सहाबी को दुआ के लिए यूँ शिक्षा दिया थाः

"اللَّهُمَّ شَفِّعْهُ فِيَّ" [2]

(ऐ अल्लाह मेरे मुतअल्लिक नबी ﷺ की शिफारिश क़बूल फरमा।) नबी ﷺ का फरमान है:

"إِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي يَومَ القِيَامَة ، فَهِيَ نَائِلَة إِنْ شَاءَ اللهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لا يُشْرِك بِاللهِ شَيْئاً" [3]

---

(1) अल-जुमरः 44
(2) तिर्मज़ी
(3) मुस्लिम

(मैंने अपनी दुआ को क़्यामत के दिन के लिए अपनी उम्मत की शिफाअत लिए महफूज़ कर रखा है, जो भी मेरा उम्मती इस हाल में मरा होगा कि उसने शिर्क नहीं किया होगा तो उसे मेरी शिफाअत हासिल होगी)

प्रश्नः क्या हम रसूल स० की तारीफ में (गुलू) ज़्यादती कर सकते हैं?

उत्तरः नहीं, हम रसूल की तारीफ में (गुलू) ज़्यादती नहीं कर सकते, अल्लाह का इर्शाद है:

﴿قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَى إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ﴾ (١)

(आप कह दीजिए कि मै भी तुम ही जैसा एक इनसान हूँ, (हाँ,) मेरी तरफ वहय् आती है, कि तुम्हारा और हमारा सब का माबूद एक ही माबूद है) नबी ﷺ का फरमान है:

" لا تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى عِيسَى ابْنَ مَرْيَم، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدٌ، فَقُولُوا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ" (٢)

(मेरी तारीफ इतनी अधिक न करो जैसा कि नसारा (ईसाइयों) ने मरयम की तारीफ में बढ़ोत्री (गुलू) की, मैं अल्लाह क बन्दा हूँ, तो केवल अल्लाह का बन्दा और रसूल कहो।

(1) अल-कहफ् 110
(2) बुखारी

विषय सूची

العقيدة الإسلامية

من الكتاب والسنة

(باللغة الهندية)

إعداد

الشيخ / محمد بن جميل زينو

الترجمة

أحمد الله بن عبد الله

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالشفا

الرياض ١١٤١٨ ص.ب ٣١٧١٧ هاتف : ٤٢٢٢٦٢٦٦ ناسوخ ٤٢٢١٩٠٦

العقيدة الإسلامية

من الكتاب والسنة

إعداد الشيخ

محمد بن جميل زينو

باللغة الهندية

ردمك: ٩٩٦٠-٩٨٠٧-٨-٢

مطبعة دار طيبة - الرياض - ت: ٤٢٨٣٨١



المكتب التعاوني للدعوة والارشاد وتوعية الجاليات بالشفا